तीर कह्या तीन अंकुड़ा, छाती छेद न गया चल।
रह्या सीने बीच आसिक के, हुआ काढ़ना रूहों मुस्किल।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज का नैन बाण तीन कोने वाला रूहों को छेद देता है। वह आशिक रूहों की छाती में अटका रह जाता है, जिसे रूहों को छाती से निकालना बड़ा कठिन होता है।

केहेर कह्या तीर त्रगुड़ा, रही सीने बीच भाल।
रोई रात दिन आसिक, रोवते ही बदल्या हाल।। ४३ ।।

श्री राजजी की मेहर का नैन बाण आशिक के सीने में भाले के समान चुभकर कहर ढा गया। उस दर्द में रात-दिन रोते-रोते आशिक रूहों की हालत ही बदल गई, तो कहर से मेहर हो गई।

अर्स बका तीर त्रगुड़ा, रह्या अर्स रूहों हिरदे साल।
ना पांच तत्व तीर त्रिगुन, ए नैन बान नूरजमाल।। ४४ ।।

यह श्री राजजी का नैन बाण अखण्ड परमधाम का तीन कोना तीर रूहों के हृदय में दुःख देता है। यह तीर न पांच तत्व का है, न तीन गुण का। यह नैन बाण नूरजमाल श्री राजजी महाराज के हैं।

ए बलवान सेहेज के, जो कदी मारें दिलमें ले।
न जानों तिन आसिक का, कौन हाल होवे ए।। ४५ ।।

यह उस बलवान श्री राजजी महाराज के सरल स्वभाव के नैन बाण की हकीकत है। यदि दिल में इश्क को लेकर नैन बाण चला दें तो न जाने आशिक रूहों का क्या हाल हो जाए?

ए बान टेढ़े अव्वल के, और टेढ़े लिए चढ़ाए।
खैंच टेढ़े मारें मरोर के, सो क्यों न आसिक टेढ़ाए।। ४६ ।।

यह श्री राजजी महाराज के तिरछे नैन बाण शुरू से ही हैं। जब तिरछे चितवन से नैन बाण मार देते हैं तो आशिक रूह की हालत खराब हो जाती है, बिगड़ जाती है, टेढ़ी हो जाती है।

कहे गुन महामत मोमिनों, नैना रस भरे मासूक के।
अपार गुन गिनती मिने, क्यों कर आवें ए।। ४७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने श्री राजजी महाराज के रस भरे नैनों का वर्णन किया है। नैनों के अन्दर बेशुमार गुण भरे हैं। उनकी गिनती कैसे करूं?

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ८०० ।।

हक मेहेबूब की नासिका

गौर निरमल नासिका, सोभा न आवे माहें सुमार।
आसिक जाने मासूक की, जो खुले होंए पट द्वार।। १ ।।

श्री राजजी महाराज की गोरी और निर्मल नासिका की शोभा कहने में नहीं आती। आशिक रूहें ही श्री राजजी महाराज की नासिका के सुख जानती हैं। यदि उन्हें जागृत बुद्धि से श्री राजजी महाराज की पहचान हो गई हो।

Nijanand App

निपट सोभा है नासिका, सोहे तैसा ही तिलक।
और नहीं इनका निमूना, ए सरूप अर्स हक।।२।।

नासिका की शोभा जैसे बेशुमार है वैसे ही तिलक अति सुन्दर बना है, जिसका कोई नमूना नहीं है। यह श्री राजजी महाराज का स्वरूप परमधाम का है।

कई खसबोए अर्स की, लेवत है नासिका।
दोऊ नैनो के बीच में, सोभा क्यों कहूं सुन्दरता।।३।।

यह नासिका परमधाम की कई प्रकार की खुशबू लेती है। दोनों नैनों के बीच इसकी सुन्दरता का वर्णन कैसे करें?

रंग उजलाई अर्स की, झांई झलके कसूंब बका।
देत सलूकी कई सुख, रूह नैन को नासिका।।४।।

नासिका का रंग उज्ज्वल है। इसमें अखण्ड लाल रंग झलकता है। नासिका की बनावट रूहों के नैनों को कई प्रकार के सुख देती है।

ए छब फब कोई भांत की, निलाट तिलक बीच नैन।
ए आसिक नासिका देख के, पावत हैं सुख चैन।।५।।

यह छवि कोई खास ढंग की है, जिससे नैनों के बीच नासिका के ऊपर तिलक माथे (मस्तक) तक गया है। आशिक रूहें श्री राजजी महाराज की नासिका को देखकर बड़े सुख का अनुभव करती हैं।

भौंह भासत भली भांतसों, पांपण पलकों पर।
ए नैन सोभा नूर जहूर, ए जाने मोमिन अन्तर।।६।।

श्री राजजी महाराज की भौंहें अच्छी लगती हैं तथा पलकें बड़ी सुन्दर शोभायमान हैं, जो श्री राजजी महाराज के नैनों के नूर की शोभा है। नैन और नासिका के अन्तर को रूहें ही जानती हैं।

अर्स फूल सुगन्ध अनगिनती, हिसाब नहीं कहूं कोए।
रसांग चीज सब अर्स की, कोई जरा न बिना खुसबोए।।७।।

परमधाम के फूलों की सुगन्धि बेशुमार है। परमधाम की और सब चीजें भी सुगन्धित हैं। बिना खुशबू वहां कुछ भी नहीं है।

सो खुसबोए सब लेत है, रस प्रेमल सुगन्ध सार।
सब भोग विवेकें लेत है, हक नासिका भोगतार।।८।।

श्री राजजी महाराज की नासिका ऐसी सब तरह की खुशबू, रस का भोग करती है।

ए को जानें रस सबन के, को जाने भोग सबन।
ए सब भोगी हक नासिका, हक सुख लेत देत रूहन।।९।।

इन सब सुगन्धियों के रस और भोग को नासिका के बिना और कौन जानता है? इन सब सुगन्धियों का आनन्द श्री राजजी महाराज की नासिका ही लेती है और रूहों को देती है।

Nijanand App

चित्त चाह्या नासिका भूखन, खुसबोए लेत चित्त चाहे।
चित्त चाही जोत सोभा धरे, सुख आसिक अंग न समाए।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मन की चाहना अनुसार ही नासिका में आभूषण पहने हैं। नासिका से चित्त चाही सुगन्धि लेते हैं। नासिका का नूर भी श्री राजजी का चित्त चाहा है। इसका सुख आशिक रूहों के मन में नहीं समाता।

हक सुख खुसबोए के, कई नए नए भोग लेत।
ले ले हक विवेक सों, नए नए रूहों सुख देत।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज खुशबू के नए-नए सुख इच्छा अनुसार लेते हैं और ले-लेकर अपने विवेक से रूहों को देते हैं।

कई कई लाड़ रूहन के, लेत देत अरस–परस।
नित नए सुख देत सनेह सों, जानों नया दूजा लिया सरस।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज कई तरह से रूहों से अरस-परस (परस्पर) लाड़ करते हैं और नित्य ही नए-नए सुख बड़े प्यार से रूहों को देते हैं। हर सुख पहले सुख से अधिक रसीला लगता है।

नित लेत प्रेम सुख अर्स में, जानों आज लिया नया भोग।
यों हक देत जो हम को, नित नए प्रेम संजोग।। १३ ।।

हम रूहें नित्य ही ऐसे सुख परमधाम में लेती हैं। हर रोज ऐसा लगता है कि आज का सुख नया है। इस तरह से श्री राजजी महाराज हम रूहों को रोज ही नए प्रेम के सुख संजोकर देते हैं।

जिमी जल तेज वाए बन, जो कछू बीच आसमान।
सब खुसबोए नूर में, सुख देत रूहों सुभान।। १४ ।।

जमीन, जल, अग्नि, वायु, वन जो कुछ भी आसमान के नीचे हैं, सब परमधाम में खुशबू और नूर से भरपूर हैं, जिनके सुख श्री राजजी महाराज रूहों को देते हैं।

महामत कहे हक नासिका, याकी सोभा न आवे सुमार।
कछू बड़ी रूह मोमिन जानहीं, जाको निस दिन एही विचार।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की नासिका की शोभा बेशुमार है। इस शोभा को श्री श्यामाजी और रूहें ही जानती हैं, जो रात-दिन वहीं परमधाम में ही रहती हैं और इसके सुख लेती हैं।

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ८१५ ॥

हक मासूक की जुबान की सिफत

जाको नामै रसना, होसी कैसी मीठी हक।
जिनकी जैसी बुजरकी, जुबां होत है तिन माफक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की रसना जिसका नाम ही रसना है, वह कितनी मीठी होगी? जैसी श्री राजजी की साहेबी है, वैसी ही उनकी रसना भी है।

Nijanand App